Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

विभाजन के आईने में झूठा-सच

Bhaskar Mishra*

Research Student, Visva-Bharati Shanti Niketan, West Bengal

सार – ***भारत-पाकिस्तान विभाजन भारतीय राज्य के इतिहास का वह अध्याय है जो एक विराट त्रासदी के रूप में अनेक भारतीयों के मन पर आज भी जस-की-तस अंकित है। अपनी जमीनों-घरों से विस्थापित, असंख्य लोग जब नक्शे में खींच दी गई एक रेखा के इधर और उधर की यात्रा पर निकल पड़े थे। यह न सिर्फ मनुष्य के जीवन की बल्कि भारतवर्ष के उन शाश्वत मूल्यों की भी परीक्षा थी जिनके दम पर सदियों से हमारी हस्ती मिटती नहीं थी। यशपाल का यह कालजयी उपन्यास उसी ऐतिहासिक कालखंड का महाआख्यान है। स्वयं यशपाल के शब्दों में यह इतिहास नहीं है, 'कथानक में कुछ ऐतिहासिक घटनाएँ अथवा प्रसंग अवश्य हैं परन्तु सम्पूर्ण कथानक कल्पना के आधार पर उपन्यास है, इतिहास नहीं।' अर्थात् यह उस जिन्दगी का आख्यान है जो अक्सर इतिहास के स्थूल ब्यौरों में कहीं खो जाती है। 'झूठा सच' के इस पहले खंड 'वतन और देश' में विभाजन के दौरान हुई लूट-पाट और हिंसा के रोंगटे खड़े कर देनेवाले माहौल और उस भीतरी विभाजन का यथार्थवादी अंकन किया गया है जिसके चलते वतन और देश दो अलग-अलग इकाइयाँ हो गए। उपन्यास यह भी जानने की कोशिश करता है कि इसके कारण क्या थे - अंग्रेजों की चाल, साम्प्रदायिकता, पिछड़ापन या आर्थिक विषमता या यह सब एक साथ।***

----------X----------

परिचय

यह उपन्यास दो भागों में विभाजित है। इसका पहला भाग वतन और देश 1958 ई० में विप्लव कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ और दूसरे भाग देश का भविष्य का प्रकाशन 1960 ई० में हुआ। इसके पहले भाग में लाहौर के भोला पांधे की गली के परिवारों के बहाने जन सामान्य के जीवन का चित्रण करते हुए देश के विभाजन एवं उससे उत्पन्न भीषण सांप्रदायिक दंगे आदि का चित्रण करते हुए शरणार्थियों के एक देश छोड़कर दूसरे में पलायन की विवशता तक का चित्रण किया गया है। दूसरे भाग में देश के निर्माण में होने वाली चूकों, नेताओं की भ्रष्टता, क्रांतिशील चेतना के भटकाव, स्वार्थ लिप्सा की ट्रेजेडी में फँसा मध्यवर्ग और इस सब के बावजूद जनता की निर्णायक विजयिनी शक्ति का सांकेतिक चित्रण विस्तृत फलक पर किया गया है।"[1]

झूठा सच के प्रमुख पात्र हैं जयदेव पुरी, उसकी बहन तारा और जयदेव पुरी की पत्नी कनक। तारा और जयदेव पुरी का एक परिवार है, कनक का दूसरा परिवार है। इन दोनों परिवार की कहानियों के माध्यम से उपन्यास की कहानी आगे बढ़ती है और अत्यधिक विस्तार में जाकर बहुआयामी हो जाती है।

झूठा सच की कहानी सन् 1947 में भारत की आजादी के समय मचे भयंकर दंगे की पृष्ठभूमि के रूप में बुनी गयी है। ब्रिटिश औपनिवेशिकता, उसकी फूट डालो और राज करो की नीति तथा मुस्लिम लीग के दो राष्ट्र का सिद्धांत से मिलकर बृहत्तर भारतीय समाज में स्वतः मौजूद छुआछूत की निम्न भावना एवं सांप्रदायिकता की दबी चेतना ऐसी उभरी कि पूरा भारत वर्ष ऐसी ज्वाला से धधक उठा जिसका कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिल पाता है। मानवीय यातना के इतिहास में यह विश्व की क्रूरतम घटनाओं में से एक घटना मानी जाएगी। लगभग एक दशक (1946 से 56 तक) इस उपद्रव का प्रभाव बना रहा।, तात्कालिक ही सही पर वहशी भावनाओं की गिरफ्त में आये हिंसक पशु बने मनुष्यों द्वारा सांप्रदायिक दंगों में हजारों-हजार व्यक्ति मौत के घाट उतार डाले गये, लाखों विस्थापित हो गये, स्त्रियों और बच्चों के साथ अमानुषिक अत्याचार किये गये और पूरे देश की एक विशाल जनसंख्या को अपना देश या वतन छोड़कर भारत या पाकिस्तान में नये सिरे से बसना पड़ा। झूठा सच के प्रथम भाग वतन और देश में इन स्थितियों का अत्यंत मार्मिक एवं विस्तृत चित्रण किया गया है। इस भाग के अंत में शरणार्थियों को लेकर आने वाली एक बस का ड्राइवर कहता है "रब्ब ने

www.ignited.in

जिन्हें एक बनाया था, रब्ब के बन्दों ने अपने वहम और जुल्म से उन्हें दो कर दिया गया है।"[2]

"यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि 'झूठासच' हिन्दी का सर्वोत्कृष्ट यथार्थवादी उपन्यास है। झूठा सच' उपन्यास-कला की कसौटी पर खरा उतरता ही है, पाठकों के मनोरंजन की दृष्टि से भी सफल हुआ है। इस उपन्यास की गणना हम गर्व के साथ विश्व के दस महानतम उन्यासों में कर सकते हैं।"

'झूठा सच' यशपाल जी के उपन्यासों में सर्वश्रेष्ठ है। उसकी गिनती हिन्दी के नये पुराने श्रेष्ठ उपन्यासों में होगी-यह निश्चित है। यह उपन्यास हमारे सामाजिक जीवन का एक विशद् चित्र उपस्थित करता है। इस उपन्यास में यथेष्ट करुणा है, भयानक और वीभत्स दृश्यों की कोई कमी नहीं। शृंगार रस को यथासम्भव मूल कथा-वस्तु की सीमाओं में बाँध कर रखा गया है। हास्य और व्यंग्य ने कथा को रोचक बनाया है और उपन्यासकार के उद्देश्य को निखारा है।[3]

रामविलास शर्मा के अनुसार 'झूठा सच' देश विभाजन और उसके परिणाम के चित्रण की काफी ईमानदारी से लिखी गई कहानी है। पर यह उपन्यास इसी कहानी तक ही सीमित नहीं है। देश-विभाजन की सिहरन उत्पन्न करने वाली इस कहानी में स्नेह, मानसिक और शारीरिक आकर्षण, महात्त्वाकांक्षा, घृणा, प्रतिहिंसा आदि की अत्यंत सहज प्रवाह से बढ़ने वाली मानवता पूर्ण कहानी भी आपको मिलेगी। "झूठा सच' हिन्दी उपन्यास साहित्य की अत्यंत श्रेष्ठ और प्रथम कोटि की रचना है।"[4]

विषय-वस्तु

झूठा सच के प्रमुख पात्र हैं जयदेव पुरी, उसकी बहन तारा और जयदेव पुरी की पत्नी कनक। तारा और जयदेव पुरी का एक परिवार है, कनक का दूसरा परिवार है। इन दोनों परिवार की कहानियों के माध्यम से उपन्यास की कहानी आगे बढ़ती है और अत्यधिक विस्तार में जाकर बहुआयामी हो जाती है।

झूठा सच की कहानी सन् 1947 में भारत की आजादी के समय मचे भयंकर दंगे की पृष्ठभूमि के रूप में बुनी गयी है। ब्रिटिश औपनिवेशिकता, उसकी फूट डालो और राज करो की नीति तथा मुस्लिम लीग के दो राष्ट्र का सिद्धांत से मिलकर बृहत्तर भारतीय समाज में स्वतः मौजूद छुआछूत की निम्न भावना एवं सांप्रदायिकता की दबी चेतना ऐसी उभरी कि पूरा भारत वर्ष ऐसी ज्वाला से धधक उठा जिसका कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिल पाता है।

झूठा सच के दूसरे खंड देश का भविष्य में स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद के दशक में देश के विकास और भावी निर्माण में बुद्धिजीवियों और नेताओं की प्रगतिशील और प्रतिगामी भूमिका का यथार्थ तथा प्रभावपूर्ण अंकन किया गया है। "जयदेव पुरी और सूद प्रतिगामी शक्तियों के प्रतिनिधि रूप में भ्रष्ट राजनीति का उदाहरण प्रस्तुत करता है, और तारा जैसी क्रांतिकारी चेतना से युक्त विकास की राह पर चलने वाली स्त्री भी सुख-समृद्धि एवं प्रभाव की लिप्सा में पड़कर विडंबना का दुःखद उदाहरण प्रस्तुत करती है। कर्म-कर्म की रट लगाने वाले प्रधानमंत्री स्वयं केवल भाषण का सहारा लेते और फिजूलखर्ची का भीषण उदाहरण प्रस्तुत करते दिखते हैं। कुल मिलाकर विस्तृत चित्र-फलक पर यशपाल दिखलाते हैं कि देश का भविष्य अंततः देश की सामान्य जनता के ही हाथ में है जो समग्र स्थितियों का अवलोकन कर सही वस्तुस्थिति को पहचान सके। इसीलिए यशपाल विभिन्न स्थितियों का चित्र उकेरते हैं, किसी पात्र का एक रैखिक या आदर्शवादी चित्रण नहीं करते हैं, क्योंकि व्यवहारिक जीवन में ऐसा हो पाना काम्य तो है, परंतु बहुधा संभव नहीं हो पाता है।[5]

इस उपन्यास में देश की दुरवस्था के लिए जनता की अंदरूनी कमजोरियों एवं निर्जीवता को भी काफी उत्तरदायी दिखलाया गया है। परंतु, उपन्यास के अंत तक जाकर यह प्रमाणित होता है कि यह चित्रण वस्तुतः वस्तुस्थिति की सही पहचान करवाने के उद्देश्य से ही किया गया है। उपन्यास के अंत में कांग्रेस के भ्रष्टाचारी परंतु प्रबलता प्राप्त नेता सूद चुनाव हार जाता है और इस परिणाम पर डॉक्टर नाथ गंभीर होकर टिप्पणी करता है अब तो विश्वास करोगे, जनता निर्जीव नहीं है। जनता सदा मूक भी नहीं रहती। देश का भविष्य नेताओं और मंत्रियों की मुट्ठी में नहीं है, देश की जनता के ही हाथ में है।

कथासार झूठा सच,' (वतन और देश) में भारत विभाजन की विभिषिकाओं के परिपाश्र्व में एक मध्यवर्गीय भारतीय-परिवार की कहानी कही गई है। "जयदेव पुरी प्रथम श्रेणी में एम. ए. कर किसी कालेज में अध्यापक बनना चाहता है, किन्तु 1942 के आन्दोलन की पुकार पर स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए, राजनीतिक जीवन में कूद पड़ता है। तारा जयदेव की स्वतंत्र और उदार विचारवाली बहिन है। वह एक कम्युनिस्ट युवक असद से प्रेम करती है। तारा का विवाह एक व्यभिचारी लम्पट और दुराचारी युवक सोमराज से हो जाता है किन्तु पुरी चुप रहता है। पुरी का विवाह कनक से हो जाता है। सुहागरात के दिन तारा का पति तारा को बुरी तरह पीटता है और हिन्दू मुस्लिम दंगो के कारण भाग जाता है किन्तु तारा को ऊपर की मंजिल से भागना पड़ता है। मुसलमानो के हाथो में पड़ने के

www.ignited.in

कारण तारा का सतीत्व भंग होता है। वह व्यथाओं और पीड़ाओं को झेलती हुई असद से मिलती है किन्तु उसकी बाट न जोहकर उसे अमृतसर पहुँचना पड़ता है।[6]

देश का भविष्य में तारा, कनक और पुरी की कथा वतन को छोडकर देश में प्रारंभ होती है। अनेक कठिनाईयों को झेलते हुए तारा भारत-सरकार के एक मंत्रालय में 'अंडर सेक्रेटरी' बन जाती है और पुरी एक कंग्रेसी नेता सूद के चक्कर में जीवन के पतन का मार्ग अपनाकर एक पत्र का सम्पादक बन जाता है। पुरी के जीवन में उर्मिला का आगमन होता है किन्तु पुरी का अंश उसके भीतर होते हुए भी वह नारी केन्द्र की शरण लेती है। कनक बौद्धिक और शारीरिक दोनों धरातलो पर पुरी से घृणा करती है और पुरी को असहाय होकर तलाक को मानना पड़ता है। कनक गिल को आत्मसमर्पण कर देती है। अन्त में तारा और डा. प्राणनाथ का विवाह हो जाता है। "वस्तु दृष्टिविधान की दृष्टि से उपन्यास में भारत विभाजन के पश्चात भारतीय परिवार की कहानी है। इसमें तारा की कथा मुख्य रुप से चलती है। अन्य कथाएँ तारा की कथा के इर्दगिर्द घूमती है। अन्य कथाओं में तारा के भाई जयदेवपुरी, तारा का लम्पट और दुराचारी पति सोमराज, तारा की भाभी कनक, तारा के प्रेमी असद, तारा के दूसरे पति डा प्राणनाथ और तारा के सहयोगी गिल की कथाएँ मुख्य है। जयदेवपुरी ओर कनक की कथा प्रारंभ के अन्त तक, तारा की कथा के साथ -साथ चलती है। पुरी को अगर इस उपन्यास का नायक नहीं माने तो पुरी के जीवन में घटने वाली अनेकानेक घटनाओं का तारा की कथा के साथ दूर का भी संबंध नहीं है।[7]

देश का भविष्य' में पुरी और तारा का जीवन दो प्रतिकूल दिशाओ में रहा है। पुरी और कनक के बीच होने वाले वैमनस्य को लेखक ने तारा के जीवन से सादृश्य दिखाने के लिए उपस्थित किया है। यह स्वातंत्रयोत्तर भारतीय कृषक परिवार की कहानी है, किन्तु अंत में तारा और प्राणनाथ के विवाह को न्यायोचित सिद्ध करने के प्रयत्न में, लेखक इसको तारा की जीवन कथा में समेंट देना चाहता है। 'झूठा-सच' का चित्रफलक बहुत बड़ा है, लेकिन एक सुगठित कथानक ने घटनाओं के अपने भीतर समेंट लिया है। यशपाल की कहानियों और उपन्यासो में कथानक का हमेंशा ध्यान रखते है और कथानक को गढने में सिद्धहस्त है। यही कारण है कि झूठा-सच' में इतने बडे चित्रफलक के बावजूद शिथिलता नहीं आती और घटना अस्वाभाविक नहीं जान पड़ती है। अगर तारा को उपन्यास का केन्द्र बिन्दु मानते है और तारा के दूसरे विवाह का औचित्य ही उपन्यास का उद्देश्य हो तो उपन्यास की वस्तु अन्विति में अभाव खटकता है, क्योकि यह बृहद उपन्यास विशाल घटनाओं और कथाओं का अम्बार है और अनेक घटनाओं का तारा के जीवन से कोई संबंध नहीं है। स्वातंत्रयोत्तर भारतीय-समाज और भारतीय-परिवार को उपन्यास का केन्द्र बिन्दु माने तो कथाओ से सगुम्फन सुन्दर रुप से दिखाई पड़ता है। कला में 'छाट और चुनाव' माने तो हमें इस उपन्यास को पढ़कर निराशा होगी। यह तो विशाल महासागर है, और महासागर की कुछ लहरो और बूंदो को चुनने का प्रयत्न लेखक ने नहीं किया है।

इसका वस्तु-शिल्प अमृतलाल नागर के 'बूंद और समुद्र' भगवती चरण वर्मा के 'भूले विखरे चित्र' और प्रेमचंद के अधिकांश उपन्यासों का शिल्प है। उसके वस्तु-विधान में विस्तार है गहराई नहीं। चरित्र-विधान-'झूठा-सच' में अनगिनत पात्र है पुरी, तारा, कनक, रामज्वाया, रामलुभाया, पंडित गिरधारीलाल, नैयर, डा. प्राण, सूद, शीला, उर्मिला और सोमराज सभी पात्र मध्यवर्गीय समाज के विभिन्न स्तरों का प्रतिनिधित्व करते है, सभी पात्र सामाजिक और आर्थिक संघर्षो से जुझते है, अधिकांश पात्र प्रेम और विवाह की समस्या को अनेक पहलुओ से सामने रखते है। यशपाल की वर्ग लेखनी इतनी सशक्त है कि वह अनगिनत पात्रो के व्यक्तित्व को उभार सकती है। पुरी उपन्यास का प्रमुख पात्र है, यह निश्चित है कि वह माक्र्सवादी नायक नहीं है इसलिये उपन्यासकार का प्रवक्ता भी नहीं है। उपन्यासकार का विचारपक्ष कनक और तारा के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है ।एक विवेचक के शब्दो में 'कनक मुनिकन्या लगती है और तारा ऋषि कन्या' ।

आधुनिक मुनि तथा आधुनिक ऋषि की कन्याएँ अस्वस्थ है। तारा ऋषि कन्या है क्योकि उसका विचारपक्ष कनक से प्रबल है। इन दोनो पात्रांत्रों को दुर्बलताओं के प्रतीक रुप में यशपाल ने चित्रित नहीं किया है। कुछ अंशो में इनको फ्रायड और माक्र्स का प्रतीक मान सकते है। उपन्यास के सभी पात्रो के जीवन में कितने ही उतार-चढाव आते है इसलिये पुरी जहाँ एक और अपनी विशेषताओ को लेकर व्यक्त है, वहा दूसरी ओर वर्गगत भावनाए भी उनमें अपने उच्चतम रुप में विकसित है। यह 'टाइप' मनोविज्ञान की कसौटी पर खरे उतरने वाले है। उन पात्रो के माध्यम से आज के समाज को चित्रित करने का -ऐतिहासिक यथार्थ को मूर्त करने का प्रयत्न किया गया है। "पुरी प्रगतिशील पात्र होते हुए प्रतिक्रयावादी ताकतों के सामने घुटने टेक देता है। तारा प्रतिक्रियावादी ताकतो के खिलाफ प्रगतिवादी चेतना का प्रतीक बनती है। पुरी माक्र्सवादी मान्यताओ के अनुसार पाजिटिव हीरो नहीं है। कनक प्रतिक्रियावादी पुरी से अपने को स्वतंत्र कर नारी स्वतंत्रता की प्रतीक बनती है। रामज्वाया और रामलुभाया

www.ignited.in

मध्यवर्गीय समाज की दुर्वलताओ का, पण्डित गिरधारीलाल समाज -सुधारको का, पुरी युवक की विकृतियो का सोमराज दुष्ट युवक का,डा. प्राण सज्जनता का, उर्मिला मूक युवती का और सूद राजनीति कुचक्रो का प्रतिनिधित्व करते है।"[8]

प्रतिनिधि परिस्थितियो के प्रतिनिधि पात्र होते हुए भी तारा, कनक और पुरी अपने व्यक्तित्व की रक्षा करते हुए प्राणवान पात्र है लेखक ने समर्पण में ही कहा है:'सच की कल्पना से रंगकर उसी जनसमुदाय की सौंप रहा हूं, जो सदा झूठ से ठगा जाकर भी सच के लिये अपनी निष्ठा और उसकी ओर बढने का साहस नहीं छोडता। जीवन के सत्य का अनावरण करना ही उपन्यासकार का उद्देश्य है। इस देश के जीवन का राजनैतिक सत्य है, जनता निर्जीव नहीं है। जनता सदा मूक भी नहीं रहती। 'देश का भविष्य' नेताओं और मन्त्रियों की मुट्ठी में नहीं है, देश की जनता के ही हाथ में है।

इसके अतिरिक्त इस उपन्यास में लेखक ने प्रेम और विवाह के सामाजिक सत्य का उद्घाटन किया है। कनक का पुरी को त्यागकर गिल के प्रति आत्मसमर्पण और तारा का विवाहित होते हुए डा. प्राणनाथ से विवाह कहां तक ठीक है? नय्यर लेखक का प्रवक्ता बनकर कहता है 'घटना तो झूठ सच नहीं होती, झूठ- सच तो घटना को प्रकट करने के प्रयोजन में होता है। मूल सत्य को प्रकट करने के लिये प्रयत्न करना या उसे जानना भी आवश्यक होता है। अतः स्वातंत्र्योत्तर भारत के भारत-विभाजन के परिपाश्व में युग के सामाजिक और राजनीतिक सत्य को प्रस्तुत करना ही उपन्यास का उद्देश्य है। 'झूठा-सच' की रचना तक यशपाल माक्र्सवादी या समाजवादी लेखक के रुप में स्वीकार करने में कोई शंका नहीं थी किन्तु इस उपन्यास में इस संदर्भ में एक प्रश्न चिन्ह खडा कर दिया है। यह निश्चित है कि यशपाल माक्र्सवाद के सैद्धन्तिक प्रचार के पूर्वाग्रह से मुक्त हुए है और यह उनकी एक महान उपलब्धि है।[9]

इतना होने पर भी "झूठा-सच' से सामाजिक यथार्थ के स्थान पर समाजवादी यथार्थवाद का रंग स्पष्ट रुप से उभर कर आता है। वर्ग-संघर्ष के फतवे इस उपन्यास में नहीं दिये है किन्तु प्रेम और विवाह की समस्या को समाजवादी दृष्टिकोण से देखा है। पुरी समाजवादी हीरो' नहीं है किन्तु कनक और तारा का जीवन उनके समाजवादी- चिन्तन को स्पष्ट करता है। समाजवादी-विचारधारा के अनुसार विवाह केवल मूक सामाजिक समझौता नहीं है। शोषण और अन्याय की स्थिति में हर पक्ष को यह अधिकार है कि वह पुराने समझोतो को भंग करके नये समझोतो की स्थापना कर सकता है।[10]

अनुसंधान क्रियाविधि

डॉ० रामविलास शर्मा यशपाल के घोर विरोधी के रूप में माने जाते हैं, परंतु उन्होंने संभवतः सबसे पहले यह घोषित कर दिया था कि झूठा सच यशपाल जी के उपन्यासों में सर्वश्रेष्ठ है। उसकी गिनती हिन्दी के नये-पुराने श्रेष्ठ उपन्यासों में होगी--यह भी निश्चित है।

नेमिचंद्र जैन ने इस उपन्यास पर अनेक आरोप लगाते हुए यह निष्कर्ष दिया था कि हिन्दी उपन्यास साहित्य की सबसे महत्त्वपूर्ण कृतियों में होने पर भी झूठा सच अंततः किसी आत्यन्तिक सार्थक उपलब्धि के स्तर को छूने में असफल ही रह जाता है।

कवि कुँवर नारायण ने इस उपन्यास की समीक्षा ही कविदृष्टि का अभाव शीर्षक से लिखी थी।इसके बरअक्स आनंद प्रकाश का स्पष्ट मत है कि "इस उपन्यास का एक बहुत बड़ा गुण है इसकी रोचकता और अत्यधिक साहित्यिकता। निश्चय ही सामाजिक वातावरण और ऐतिहासिक यथार्थ (यशपाल द्वारा प्रयुक्त शब्द) के बेबाक चित्रण को ज्यादातर सही साहित्यिक समझ और अभिव्यक्ति से जोड़ पाने में यशपाल को पर्याप्त सफलता मिली है।[11]

शिवकुमार मिश्र के अनुसार झूठा सच को पाठकों की व्यापक सराहना मिली। उस पर अखबारी कतरन होने के आरोप भी इधर-उधर से आये परन्तु रमेंश कुंतल मेंघ ने उसे कला जैसा लिखा गया इतिहास कह कर उसकी रचनात्मक प्रकृति की सही पहचान की। इतने विशद पट पर, आधुनिक इतिहास की एक रचनात्मक घटना इतिहास से विलग कैसे रह सकेगी? यशपाल की खूबी है कि उन्होंने उस इतिहास को कला के अपने सौष्ठव से जोड़कर प्रस्तुत किया।"[12]

रामदरश मिश्र जी का मानना है कि "बातें बहुत सी है किंतु मुझे लगता है कि लेखक ने तत्कालीन घटनाओं और परिस्थितियों के विस्तार तथा मानवीय अन्तसत्यों की गहनता, आधुनिक नियति और मूल्य का बहुत सुंदर सामंजस्य किया है। यह शिकायत की गयी है कि इस उपन्यास में लेखक की अपनी दृष्टि (यानी मार्क्सवाद दृष्टि) आर-पार व्याप्त नहीं है किंतु मुझे लगता है कि यह लेखक की सर्जनात्मक दृष्टि के लिए शुभ लक्षण है कि वह यथार्थ के लोक की मुक्त यात्रा करती है, इसी पूर्वग्रह से आक्रांत नहीं है। यह रचनात्मक दृष्टि एक ओर लेखक को यथार्थ के सही स्वरूप को देखने के लिए प्रेरित करती है, दूसरी ओर चूँकि यह सर्जन दृष्टि है, घटनाओं और तथ्यों को ज्यों-का-त्यों न देखकर उन्हें मानवीय सत्यों के संदर्भ में देखती है और उसके

www.ignited.in

भीतर से कुछ निर्मित करती है। प्रस्तुत महाकाव्यात्मक उपन्यास में यशपाल की दृष्टि ने कहीं साथ नहीं छोड़ा है, वह आरपारदर्शी है और उसे इस बात की पहचान है कि क्या होकर भी झूठ है और क्या ना होकर भी सही है। लेखक मार्क्सवादी है किंतु इस उपन्यास में उसकी मार्क्सवादी विचारधारा अपने-आप में हावी न होकर उसकी कलात्मक दृष्टि की सहायक है।"[13]

मधुरेश ने झूठा सच उपन्यास में महाकाव्य शीर्षक से विस्तृत समीक्षात्मक आलेख लिखा और कुँवर नारायण जी के आरोपों का विश्लेषणात्मक उत्तर देते हुए घोषित किया कि "झूठा सच यशपाल की सर्वश्रेष्ठ रचना के रूप में तो स्वीकृत है ही, वह हिन्दी के दस श्रेष्ठ और उल्लेखनीय उपन्यासों में से भी एक है।"[14]

उपसंहार

झूठा सच भारत विभाजन (1947) की पृष्ठभूमि पर केंद्रित वृहत्तर एवं बहुआयामी फलक वाला उपन्यास है। इसमें विभाजन के पहले से लेकर विभाजन के बाद तक के समय का बारीक चित्रांकन किया गया है। जयदेव पुरी एवं उसकी बहन तारा को केंद्र में रखने के बावजूद यह उपन्यास नायक या नायिका प्रधान नहीं है और इस रूप में भी यह उपन्यास पूर्व निर्मित बँधे-बँधाये औपन्यासिक ढाँचे को अतिक्रमित. करता है। यह उपन्यास वस्तुतः विभिन्न धर्मों एवं वर्गों में बँटे वृहत्तर जन-समाज के उत्थान-पतन की सुविस्तीर्ण गाथा है, जिसका चित्रण विभाजन को केंद्र में रखते हुए किया गया है। विभाजन से पहले लोगों के मन में उत्पन्न होने वाले विघटनवादी भाव तथा विभाजन के बाद देश अथवा शासन के संघटन के लिए आवश्यक समर्पण एवं सूझबूझ में होने वाली कमी - दोनों पर सूक्ष्म दृष्टि रखते हुए यशपाल ने इस उपन्यास का ताना बाना बुना है। सांप्रदायिक चेतना किस प्रकार मानवीय नियति को दूर तक प्रभावित करती है तथा परिस्थितियों की विकट मार जनसामान्य में निहित क्रांतिकारी चेतना को भी किस प्रकार कुंठित करते हुए स्वार्थ लिप्सा की ओर मोड़ सकती है, इसका अत्यंत मार्मिक चित्रण यशपाल ने इस उपन्यास में किया है। भारत का मध्य वर्ग क्रांतिकारी चेतना से युक्त होकर पूंजीपति वर्ग के पाखंड की आलोचना करते हुए भी किस प्रकार स्वयं वैसा ही जीवन जीने की ट्रैजेडी की ओर बढ़ते जाता है, इसका औपन्यासिक रचाव देखने योग्य है।"[15]

उपन्यास का रचनात्मक गठन इतना कुशल है कि इस महाकाय उपन्यास की महाकाव्यात्मकता इस रहस्य में अंतर्निहित मानी गयी है कि इसके कथा-संघटन में यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि झूठा सच तारा की नियति कथा के बहाने देश के विभाजन का वृत्तांत है या कि देश विभाजन के परिणाम स्वरूप है तारा की नियति। उपन्यास में तारा स्वयं करती है- मेंरे भाग्य के कारण देश का बँटवारा हुआ या देश के भाग्य के कारण मेंरी दुर्गति हुई।"16

सन्दर्भ सूची

1. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण-2009, पृष्ठ-203.
2. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण-1997, पृष्ठ-330-31.
3. यशपाल रचनावली, खण्ड-3 (झूठा सच, भाग-1 वतन और देश) लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पेपरबैक संस्करण-2007, पृष्ठ-415.
4. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण-2009, पृष्ठ-203.
5. उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता, वीरेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, नयी दिल्ली, संस्करण-2009, पृष्ठ-59.
6. यशपाल रचनावली, खण्ड-3 (झूठा सच, भाग-2 देश का भविष्य) लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पेपरबैक संस्करण-2007, पृष्ठ-540.
7. उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता, वीरेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, नयी दिल्ली, संस्करण-2009, पृष्ठ-54.
8. कथा विवेचना और गद्य शिल्प, रामविलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण-1999, पृष्ठ-77-78.
9. उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता, वीरेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, नयी दिल्ली, संस्करण-2009, पृष्ठ-71.
10. कथा विवेचना और गद्य शिल्प, रामविलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण-1999, पृष्ठ-75.

www.ignited.in

11. अधूरे साक्षात्कार, नेमिचन्द्र जैन, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण-2002, पृष्ठ-81.

12. हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा, रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण-2004, पृष्ठ-139-40.

13. आनन्द प्रकाश लिखित झूठा सच की समीक्षा, आधुनिक हिन्दी उपन्यास, संपादक- भीष्म साहनी एवं अन्य, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-1980, पृष्ठ-131.

14. आलोचना के प्रगतिशील सरोकार, शिवकुमार मिश्र, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, संस्करण-2012, पृष्ठ-136-37.

15. उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता, वीरेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, नयी दिल्ली, संस्करण-2009, पृष्ठ-71-72.

16. यशपाल: रचनात्मक पुनर्वास की एक कोशिश, मधुरेश, आधार प्रकाशन प्रा० लि०, पंचकूला, हरियाणा, पेपरबैक संस्करण-2006, पृष्ठ-229.

Corresponding Author

Bhaskar Mishra*

Research Student, Visva-Bharati Shanti Niketan, West Bengal

ravimishra973@gmail.com